AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

परिवेशपारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक तथा साहित्यिक

Khedkar Savita Sadashiv
Research Scholar

Dr. Mohammad Kamil
Professor
Hindi

Glocal school of Arts and Social Science

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER.IFANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, ISHALL BELEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी जी का पारिवारिक जीवन अभावों और पीड़ाओं के अनुभवों का एक शक्ति पुँज है, जिससे दूसरों को हमेशा आगे जीवन पथ पर बढ़ते रहने की प्रेरणा मिली है। उनकी कविताओं से जीवन–पथ पर आने वाली पीड़ाओं की त्रासद अवस्थिति का एहसास होता है। माहेश्वरी जी के बचपन में हीउन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा था। परिवार में पिता अपने व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति व माता भी अच्छी गृहणी थी। पिता की देख–रेख में रहकर इन्होंने बाल्यकाल की शिक्षा–दीक्षा प्राप्त की। उन्हें हर कदम पर समस्याओं से लड़ने की हिम्मत अपने परिवार से ही मिली। वास्तव में माहेश्वरी जी का जीवन तथा साहित्य उनके मनुष्य होने के लिये उनकी प्रतिश्रुति एवं प्रतिबद्धता का ही परिचायक है। इनकी कविताओं में आत्म–स्वीकृति उन की भी तरीगहराई का आभा सकराती है :

तन से सीमित हूँ पर अंतर
में असीम आकाश लिए हूँ।
मैं उसका ही रूप एक जिस
की अभिव्यक्ति सृष्टि यह सारी,
है मेरा विस्तार कि उतना
है जितनी समष्टि यह सारी।
श्वासों से सीमित हूँ पर मैं
अमर, असीमित श्वास लिए हूँ।[1]

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

अभावों और पीड़ाओं के अनुभव में भटकते हुए किसी संवदेनशील व्यक्ति का अक्षरों की दुनिया से जुड़ जाना असंभाव्य नहीं और यदि इन पीड़ाओं का सिलसिला कही अधिक लंबा होतो भीतर की अभिव्यक्ति मनुष्य को अक्सर कचोट्ती हैं। परिवार के परिवेश की माहेश्वरी जी के जीवन में अहम् भूमिका रही है, जिसके कारण उन की कविताओं में यह भाव स्पष्ट दिखायी देता है। भीतरी तनावों, भविष्य की बनती–बिगड़ती आकांक्षाओं में माहेश्वरी जी के भीतर का सर्जक अभिव्यक्ति के लिए बराबर संघर्ष रत रहा है। लेखन की छिट–पुट शुरूआत तो छात्र जीवन में ही हो गयी थी, जब माँ को रामचरितमानस के चुने हुए अंश सुनाते हुए या खड़ी बोली के कवियों के कवित्त, सवैये आदि गाकर सुनाते हुए किशोर माहेश्वरी जी के मन में अक्सर यह भावना उत्पन्न होती कि काश वह भी कविता लिख सकता और तभी से टूटी–फूटी तुकबंदियाँ उसके मन में बनने लगी थीं, परन्तु सृजन की विधिवत् प्रक्रिया का आरंभ इलाहाबाद से हुआ। माहेश्वरी जी को परिवारिक स्थिति का ज्ञान कराते हुए उनके पिता ने एक नसीहत देते हुए कहा था :

'सुखी–सूखी खाय के, कबिरा पानीपी
देखि पराई चूपड़ी, मत ललचावेजी।
'हारिये न हिम्मत, बिसारिये न रामनाम।[3]

द्वारिका प्रसाद जी को यह सीख पिता की दी हुई थी कि कठिनाइयों के समय हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। अभावों के कचोटते एहसासों की इस कठोर दीक्षा के कारण बालक द्वारिका प्रसाद में एक वयस्क समझ बचपन में ही आगयी थी। माहेश्वरी जी का जीवन कष्ट कंटकों से भरा हुआ था। उनके जीवन में बहुत उतार–चढ़ाव आये, लेकिन माहेश्वरी जी ने पिता की दी हुई सीख से कभी अपना साहस नहीं खोया।

माहेश्वरी जी का कवि विद्यार्थी जीवन में ही उभरा और प्रथमतः गाँव की प्रकृति के साहचर्य में ही उन्होंने प्रकृति और परिवेश की रचनाएँ लिखीं। कर्मठता तथा साहस के साथ परिस्थितियों से मुकाबला करने की शक्ति उन्हें अपने पिताजी से ही मिली। पिताजी का जिक्र आते ही माहेश्वरी जी की आँखे नम हो जाती हैं और संघर्ष भरे अतीत की याद ताजा हो जाती है। माहेश्वरी जी के पिताजी कर्मठ और उदार थे। भीड़–भाड़ से दूर एकान्त में रहना उन्हें पसंद था। इस प्रकार प्रकृति का साहचर्य माहेश्वरी जी को अपने पिताजी के संस्कारों से ही मिला। गाँव व प्रकृति के इस धरातल पर अनुभूत कवि की अधिकांश रचनाएँ उसके पहले कविता संग्रह 'दीपक' में सम्मिलित हैः

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

हे दीन बन्धु करुणा निधान
जगती–तल के चिरसत्य प्राण।
हो रही व्याप्त है कण–कण में
तेरी ज्योतिर्ली लामहान।[4]

बचपन से ही माहेश्वरी जी सामाजिकता से जुड़े हुए थे। माहेश्वरी जी की बाल्या वस्था गाँव में ही व्यतीत हुई। गाँव में व्यक्ति एक–दूसरे के सुख–दुःख में आत्मीयता से शरीक होता है। माहेश्वरी जी ने भी वह आत्मीयता स्पष्ट दिखायी देती है। माहेश्वरी जी बनावट की दुनिया से बहुत दूर थे, उन्होंने अपने जीवन में सभी का हित चाहा है। गाँव समाज में सभी भाईचारे की भावना से रहते हैं। तीज त्यौहारों पर समाज में मुसलमान, हरिजन, नाई, धोबी, कहार, ब्राह्मण, वैश्य सभी का अद्‌भुत सामंजस्य था। यह सामंजस्य अब वैसा नहीं रहा है। लोगों का दृष्टि कोण काफी बदल गया है। घर–घर में पट्‌टीदारी और राजनीति की भावना ने यह सामंजस्य छिन्न–भिन्न कर दिया है। माहेश्वरी जी स्वयं को समाज के लिए समर्पित मानते थे। एक छोटी सी घटना ने माहेश्वरी जी के जीवन में समाज में व्याप्त भेद–भाव व जाति–पाँति के विरुद्ध खड़ा कर दिया। एक बार माहेश्वरी जी आगरा के रावतपाड़ा स्थित मनःकामेश्वर मन्दिर में दर्शनार्थ गये तो वहाँ से उनके जूते चोरी हो गये। तब माहेश्वरी जी कुछ गुनगुना ये उनकी गुनगुनाहट किसी सज्जन ने सुनली। वे सज्जन बोले–मन्दिर की दाहिनी ओर की दीवार में एक झरोखा है, उसमें से जूते पहने ही दर्शन कर लीजिए। जब माहेश्वरी जी को जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि यह क्यों बनवाया हैं? तब वहीं के एक व्यक्ति ने बताया कि सफाई कर्मचारियों के लिए दीवार तोड़कर यह झरोखा बनवाया है। माहेश्वरी जी के मनपर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ा। माहेश्वरी जी आशावादी व्यक्ति थे। अपने चारों ओर व्याप्त सामाजिक उथल–पुथल को देखकर उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से नैतिक जीवन मूल्यों को उद्‌घाटित किया। परिवार से ही माहेश्वरी जी को धार्मिक संस्कार मिले थे। उनको बचपन में ही रामचरितमानस के चुने हुए अंश याद थे, जिन्हें अक्सर अपनी माँ को सुनाते थे। इनका अन्त र्मन कहीं न कहीं उस असीम सत्ता कोस्वी कारकर ताथा। माहेश्वरी जी ने भीज बस्वी कार किया जब प्रथम अवसर पर इलाहाबाद में ही एल0टी0 प्रशिक्षण कॉलेज, इलाहाबाद में नियुक्ति पत्र मिला तब उन्होंने महसूस किया कि उनकी पीठ पर किसी अव्यक्तदैवीय शक्ति का हाथ है। प्रकृति के न्याय और उसकी अव्यक्तदैवीय शक्ति में माहेश्वरी जी की सदैव से ही आस्था रही थी और उसी दैवीय शक्ति के विश्लेषण के कारण उन्हें जीवन–पथ पर हमेशा मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। उन्होंने बचपन में एक गीत सुना था जिससे वह जीवन भर प्रेरित होते रहे–

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

"मन साफते राहै यान हीं पूछले जी से

फिर जो कुछ तुझे करना है, तू करले खुशी से।"[5]

अर्था भाव तो माहेश्वरी जी के जीवन में बचपन से ही देखने को मिलता है। उनको उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए हर कदम पर आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ा। पिता किसान थे। वह बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में व उनको सुख–सुविधाएँ प्रदान करने मे ंअसमर्थ थे। लेकिन माहेश्वरी जी ने बचपन से ही अपनी वयस्कबुद्धि का परिचय दिया। ट्यूशन करके उन्होंने अपनी आर्थिक समस्या का समाधान निकाला। कभी–कभी तो माहेश्वरी जी के सामने अर्थाभावविकट समस्या के रूप में सामने प्रस्तुत हुआ, परन्तु उन्होंने विषम परिस्थितियों मे भी हिम्मत व धैर्य का साथ नहीं छोड़ा। वे अपने पथ पर अग्रसर होते गये और साथ ही विभिन्न आर्थिक साधनों के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति को सँभालते गये। एक बार तो माहेश्वरी जी को बहुत बेमन से अपनी कविता संग्रह 'दीपक' से सौ रुपये का एक मुश्त पारिश्रमिक लेकर इलाहाबाद के ओंकार प्रेस नाम से एक प्रकाशक विश्वम्भरनाथ बाजपेयी जी को देनी पड़ी। माहेश्वरी जी ने प्रणकर रखा था कि वह भतीजी की शादी में 500 रुपये का योग दान देंगे, लेकिन अर्थाभाव के कारण उनकी अपनी कविता 'क्रौंच वध' बाजपेयी जी को तीनसौ रूपये में ही देनी पड़ी।[6] माहेश्वरी जी का अक्षरों की दुनिया से जुड़ जाना, इसके पीछे उनके अन्तर्मन की वेदना ही रही है। काव्य के माध्यम से उन्होंने बाल्यकाल में बच्चों के आस–पास के परिवेश जिससे वे कभी गुजरे थे, का बड़ा सुन्दर ही चित्रण किया है। माहेश्वरी जी के जीवन के बाल्यावस्था व किशोरावस्था की वह विषम परिस्थितियाँ उनके मानस–पटल पर अमिट छाप छोड़ गईं, जो उनके साहित्य मे ंभी देखने को मलती है।

माहेश्वरी जी को अपने जीवन पथ पर एक बार राजनीति के जाल में फँसना पड़ा। एक बार की छोटी–सी घटना जो माहेश्वरी जी को अविस्मरणीय रही है। माहेश्वरी जी जब इलाहाबाद से फर्रूखाबाद स्थानान्तरण होकर आये तो फर्रूखाबाद जिले की एक तहसील पर एक बड़ा ही पुराना व प्रसिद्ध जूनियर हाईस्कूल था–छिवरामऊ। दुर्भाग्य से वहाँ के प्रधानाध्यापक के ऊपर बालकों से अधिक फीस लेने का आरोप लगगया। माहेश्वरीजी को जाँच कार्य के लिए वहाँ जाना पड़ा। प्रधानाध्यापक ने अपनी गलती स्वीकार करली व माहेश्वरी जी से क्षमा याचना की। माहेश्वरी जी ने जिला परिषद अध्यक्ष को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की,जिसमे ंइन्होंने आरोपी प्रधानाध्यापक को स्थानान्तरित कर सीनियर प्रधानाचार्य के नीचे नियुक्तिदी। वहीं वेतनमान दिये जाने की माहेश्वरी जी ने जिला परिषद् अध्यक्ष से संस्तुति की, जिसको उन्होंने स्वीकार कर लिया। कुछ दिनों बाद जिला परिषद् की बैठक में क्षेत्रीय सदस्यों द्वारा माहेश्वरी जी पर लांछन लगाया। फलस्वरूप श्यामलाल परिषद् के अध्यक्ष ने माहेश्वरी जी के ऊपर लगे लांछन का विरोध किया। तब माहेश्वरी जी को एहसास हुआ कि राजनीति की जड़े प्रत्येक स्तर पर फैली हुई हैं।

संदर्भ

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

1. मार्गोलिस, एम.एफ. (2018)। राजनीति से लेकर राजनीति तकः कैसे पक्षपात और राजनीतिक माहौल धार्मिक पहचान को आकार देते हैं। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस.
2. विलानुएवा, के., बैडलैंड, एच., क्वाल्सविग, ए., ओ'कॉनर, एम., क्रिश्चियन, एच., वूलकॉक, जी., .और गोल्डफेल्ड, एस. (2016)। क्या पड़ोस में बना माहौल बच्चों के विकास में फर्क ला सकता है? स्थान–आधारित बच्चों की नीति के लिए साक्ष्य तैयार करने के लिए अनुसंधान एजेंडा का निर्माण करना। अकादमिक बाल रोग विज्ञान, 16(1), 10–19।
3. पोलाक, आर.ए. (1985)। परिवारों और परिवारों के लिए लेनदेन लागत दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक लिटरेचर, 23(2), 581–608।
4. फर्ग्यूसन, के.एम. (2006)। सामाजिक पूंजी और बच्चों की भलाईः अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक पूंजी साहित्य का एक महत्वपूर्ण संश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल वेलफेयर, 15(1), 2–18.
5. स्ज्रेटर, एस., और वूलकॉक, एम. (2004)। संगति से स्वास्थ्य? सामाजिक पूंजी, सामाजिक सिद्धांत, और सार्वजनिक स्वास्थ्य की राजनीतिक अर्थव्यवस्था। महामारी विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 33(4), 650–667।
6. किंग, ए.डी. (2012)। औपनिवेशिक शहरी विकासः संस्कृति, सामाजिक शक्ति और पर्यावरण। रूटलेज।
7. डू, एक्स. (2017)। चीनी पारिवारिक फर्मों में उद्यमियों की धार्मिक आस्था, कॉर्पोरेट परोपकार और राजनीतिक भागीदारी। जर्नल ऑफ बिजनेस एथिक्स, 142, 385–406।
8. होमर–डिक्सन, टी. एफ. (1991)। दहलीज परः तीव्र संघर्ष के कारणों के रूप में पर्यावरणीय परिवर्तन। अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा, 16(2), 76–116.
9. जलैस, ए. (2014)। बाघों का जंगलः सुंदरबन में लोग, राजनीति और पर्यावरण। रूटलेज।
10. होल्म, टी., पियर्सन, जे.डी., और चौविस, बी. (2003)। पीपलहुडः अमेरिकी भारतीय अध्ययन में संप्रभुता के विस्तार के लिए एक मॉडल। विकाजो सा समीक्षा, 18(1), 7–24।
11. होल्म, टी., पियर्सन, जे.डी., और चौविस, बी. (2003)। पीपलहुडः अमेरिकी भारतीय अध्ययन में संप्रभुता के विस्तार के लिए एक मॉडल। विकाजो सा समीक्षा, 18(1), 7–24।
12. सियान, एस., एग्रीजी, डी., राइट, टी., और अल्सलूम, ए. (2020)। सऊदी अरब में अंतरराष्ट्रीय ऑडिट फर्मों में बाधाओं पर बातचीतः लिंग, राजनीति और धर्म की बातचीत की खोज। लेखांकन, संगठन और समाज, 84, 101103।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

13. विनर, आर.एम., ओजर, ई.एम., डेनी, एस., मर्मोट, एम., रेसनिक, एम., फतुसी, ए., और करी, सी. (2012)। किशोरावस्था और स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारक। लैंसेट, 379(9826), 1641–1652।

14. वैन काम्प, आई., लीडेलमेइजर, के., मार्समैन, जी., और डी हॉलैंडर, ए. (2003)। शहरी पर्यावरणीय गुणवत्ता और मानव कल्याणः एक वैचारिक ढांचे और अवधारणाओं के सीमांकन की ओरय एक साहित्य अध्ययन. लैंडस्केप और शहरी नियोजन, 65(1–2), 5–18.

15. अल्बर्ट्ज, आर., और श्मिट, आर. (2012)। प्राचीन इजराइल और लेवांत में परिवार और घरेलू धर्म। पेन स्टेट प्रेस।

16. अल्बर्ट्ज, आर., और श्मिट, आर. (2012)। प्राचीन इजराइल और लेवांत में परिवार और घरेलू धर्म। पेन स्टेट प्रेस।

17. फेथ, एम.एस., फॉनटेन, के.आर., बास्किन, एम.एल., और एलीसन, डी.बी. (2007)। जनसंख्या में मोटापे को कम करने की दिशा मेंः भोजन, खान–पान और मोटापे की समस्याओं के लिए व्यापक स्तर का पर्यावरणीय दृष्टिकोण। मनोवैज्ञानिक बुलेटिन, 133(2), 205.

18. बेनार्ड, बी. (1991)। बच्चों में लचीलेपन को बढ़ावा देनाः परिवार, स्कूल और समुदाय में सुरक्षात्मक कारक।

19. फुकुयामा, एफ. (2001)। सामाजिक पूंजी, नागरिक समाज और विकास। तृतीय विश्व त्रैमासिक, 22(1), 7–20.

20. कुमार, एस., साहू, एस., लिम, डब्ल्यू.एम., और डाना, एल.पी. (2022)। उद्यमिता और व्यवसाय में सामाजिक आकार देने वाली शक्ति के रूप में धर्मः प्रौद्योगिकी–सशक्त व्यवस्थित साहित्य समीक्षा से अंतर्दृष्टि। तकनीकी पूर्वानुमान और सामाजिक परिवर्तन, 175, 121393।

21. कुमार, एस., साहू, एस., लिम, डब्ल्यू.एम., और डाना, एल.पी. (2022)। उद्यमिता और व्यवसाय में सामाजिक आकार देने वाली शक्ति के रूप में धर्मः प्रौद्योगिकी–सशक्त व्यवस्थित साहित्य समीक्षा से अंतर्दृष्टि। तकनीकी पूर्वानुमान और सामाजिक परिवर्तन, 175, 121393।

22. क्रिश्चियन, जे., मेलो, जे., और थॉमस, एस. (2006)। कैदियों के पारिवारिक संबंधों के सामाजिक और आर्थिक निहितार्थ। जर्नल ऑफ क्रिमिनल जस्टिस, 34(4), 443–452।

23. सबा, एस., कार्सरुड, ए.एल., और कोकक, ए. (2014)। उद्यमशीलता की तीव्रता पर सांस्कृतिक खुलेपन, धर्म और राष्ट्रवाद का प्रभावः तुर्की परिवार फर्मों के छह प्रोटोटाइप मामले। लघु व्यवसाय प्रबंधन जर्नल, 52(2), 306–324।

ISSN: 2320-3714
Volume 4 Issue 3
December 2021
Impact Factor: 10.2
Subject : Hindi

24. हैरिसन, ए.ओ., विल्सन, एम.एन., पाइन, सी.जे., चौन, एस.क्यू., और ब्यूरियल, आर. (1990)। जातीय अल्पसंख्यक बच्चों की पारिवारिक पारिस्थितिकी। बाल विकास, 61(2), 347–362.

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patentor anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism /Guide Name /Educational Qualification /Designation /Address of my university/college/institution/Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright / Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the data base due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

Khedkar Savita Sadashiv
Dr. Mohammad Kamil